न=नहीं; **एव**=निःसन्देह; **किंचित्**=कुछ भी; **करोमि**=मैं करता हूँ; **इति**=इस प्रकार; **युक्तः**=बुद्धियोग से युक्त; **मन्येत**=माने; **तत्त्ववित्**=तत्त्ववेत्ता; **पश्यन्**=देखता हुआ; **श्रृण्वन्**=सुनता हुआ; **स्पृशन्**=स्पर्श करता हुआ; **जिघ्रन्**=सूंघता हुआ; **अश्नन्**=खाता हुआ; **गच्छन्**=गमन करता हुआ; **स्वपन्**=स्वप्न देखता हुआ; **श्वसन्**=श्वास लेता हुआ; **प्रलपन्**=वार्ता करता हुआ; **विसृजन्**=त्यागता हुआ; **गृह्णन्**=ग्रहण करता हुआ; **उन्मिषन्**=खोलता हुआ; **निमिषन्**=बन्द करता हुआ; **अपि**=भी; **इन्द्रियाणि**=इन्द्रियाँ; **इन्द्रियार्थेषु**=इन्द्रियतृप्ति में; **वर्तन्ते**=प्रवृत्त हैं; **इति**=इस प्रकार; **धारयन्**=समझता हुआ।

अनुवाद

बुद्धियोग से युक्त पुरुष देखते, सुनते, स्पर्श करते, सूंघते, खाते, जाते, सोते तथा श्वास लेने में प्रवृत्त होते हुए भी अपने अन्तर में यही मानता है कि वास्तव में वह कुछ भी नहीं करता; बोलते, त्यागते, ग्रहण करते, और नेत्रों को खोलते-मीचते हुए भी वह निरन्तर जानता है कि इन्द्रियाँ ही अपने विषयों में प्रवृत्त हो रही हैं और वह उनसे पृथक् है।।८-९।।

तात्पर्य

कृष्णभावनाभावित महापुरुष का जीवन पवित्र होता है। इसलिए कर्ता, कर्म, अधिष्ठान, चेष्टा तथा दैव—इन पाँच प्रकार के निमित्त-उपादान कारणों पर आधारित किसी भी कर्म से उसका कोई भी प्रयोजन नहीं रहता। इसका कारण यह है कि वह श्रीकृष्ण के दिव्य भक्तियोग में तत्पर है। यद्यपि वह देह तथा इन्द्रियों से कर्म करता प्रतीत होता है, परन्तु उसे अपने यथार्थ स्वरूप—'भगवद्भक्ति-परायणता' का सदा बोध रहता है। मोहावस्था में इन्द्रियाँ इन्द्रियतृप्ति में तत्पर रहती हैं, जबकि कृष्णभावनामृत में वे श्रीकृष्ण की तुष्टि में प्रवृत्त रहती हैं। अतः इन्द्रियविषयों में संलग्न लगने पर भी कृष्णभावनाभावित पुरुष नित्यमुक्त है। देखने, सुनने, बोलने, त्यागने आदि कर्मों के लिए इन्द्रियक्रियाएँ की जाती हैं। कृष्णभावनाभावित पुरुष इन्द्रियक्रियाओं से कभी प्रभावित नहीं होता। वह भगवत्सेवा के अतिरिक्त अन्य किसी उद्देश्य से कर्म नहीं कर सकता, क्योंकि जानता है कि वह श्रीभगवान् का नित्य दास है।

16/5

ब्रह्मण्याधाय कर्माणि संगं त्यक्त्वा करोति यः।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा।।१०।।

ब्रह्मणि=भगवान् श्रीकृष्ण में; **आधाय**=समर्पित कर; **कर्माणि**=सम्पूर्ण कर्म; **संगम्**=आसक्ति को; **त्यक्त्वा**=त्यागकर; **करोति**=करता है; **यः**=जो; **लिप्यते**=लिपायमान होता; **न**=नहीं; **सः**=वह; **पापेन**=पाप से; **पद्मपत्रम्**=कमल के पत्ते के, **इव**=समान; **अम्भसा**=जल से।

अनुवाद

श्रीभगवान् में कर्मफल का समर्पण करके और आसक्ति को त्यागकर स्वधर्म